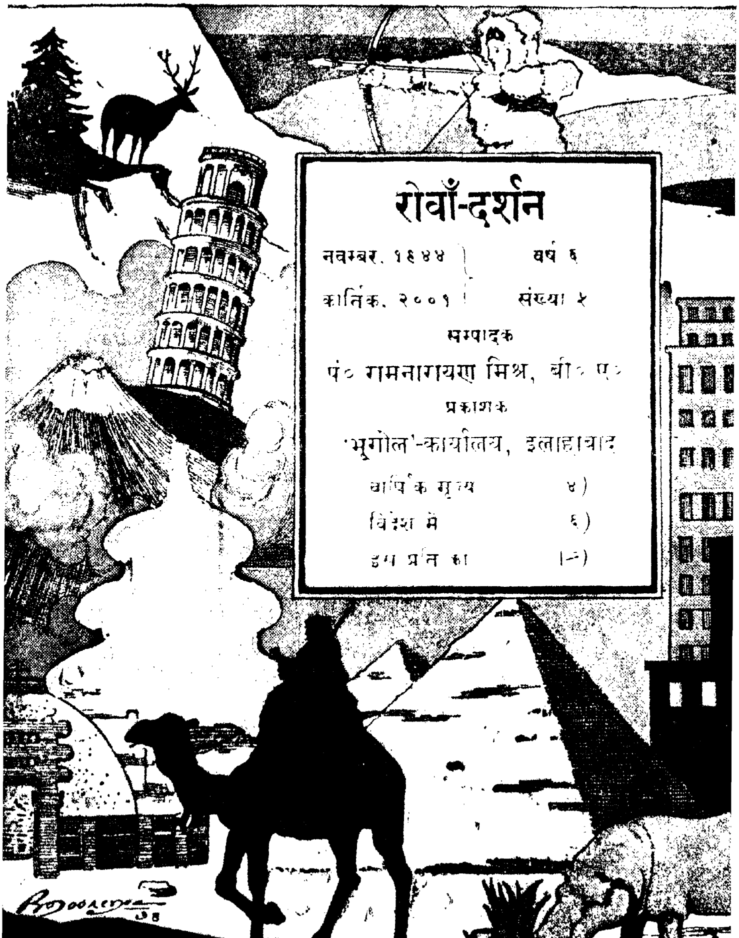
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६१



रीवाँ-दर्शन

नवम्बर, १९४४ | वर्ष ६

कार्तिक, २००१ | संख्या ५

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ४)

विदेश में ६)

इस प्रति का ।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

स्थिति

स्थित सीमा, तथा विस्तार

प्राकृतिक—रीवां राज्य, ग्वालियर राज्य को छोड़ कर मध्य भारत का सब से बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्र फल लगभग १३००० वर्ग मील है और यह २२°३८' और २५°१२' उ० तथा ८०°३२ और ८२°५१' पू० तक फैला हुआ है। इसकी उत्तरी सीमा बांदा, इलाहाबाद और मिर्जापुर के ज़िले बनाते हैं। इसके पूर्व में ज़िला मिर्जापुर और छोटा नागपुर तथा दक्षिण में मध्य भारत स्थित हैं। राज्य की पश्चिमी सीमा बघेल खंड को मैहर, नागोद और सोहावल रियासतें बनाती हैं।

रीवां के तीन प्राकृतिक विभाग बड़ी सरलता से किए जा सकते हैं :—

(१) बीच का पठार।

(२) निचले प्रदेश जिन्हें तरोहार कहते हैं।

(३) पहाड़ी भाग जो कि कैमूर पर्वत श्रेणी के दक्षिण में है।

बीच का पठार रीवां नगर के चारों ओर फैला हुआ है और तरीहार का निचला प्रदेश गंगा के मैदान में पड़ता है। पहाड़ी भाग कैमूर पर्वत के दक्षिण में

स्थित है। यह सारा भाग हरे भरे और घने जंगलों से ढका हुआ है और पठारी भाग उपजाऊ मिट्टी से ढका हुआ है।

कैमूर पर्वत से निकल कर बहुत सी नदियां गंगा यमुना के द्वाबा की ओर बहती हैं। इनमें से सब से मुख्य टोंस नदी है।

टोंस नदी मैहर राज्य में कैमूर पर्वत पर स्थित एक तालाब से निकलती है। यहां से लगभग ११६ मील तक यह उत्तरी-पूर्वीय दिशा में बहती है। मैहर और रीवां राज्यों में बहने के पश्चात् यह नदी देवरा नामक गांव के पास बृटिश भारत में प्रवेश करती है। मैहर राज्यों के जिन भागों से होकर यह बहती है वह पहाड़ी है। लेकिन रीवां में यह उपजाऊ भूमि पर बहती है। यहीं पर इसकी सब से बड़ी सहायक नदी सतना इससे आकर मिलती है।

लगभग चालीस मील बहने के बाद यह और इसकी सहायक नदियां बहुत से झरने बनाती हैं। इसमें सब से बड़ा झरना बीहार है। यह लगभग ६०० फुट चौड़ा और ३७० फुट ऊँचा है। पाचैया का झरना

भी बहुत प्रसिद्ध है किन्तु यह बीहार झरने से छोटा है। इसकी उँचाई केवल ३०० फुट है और चौड़ाई भी अधिक से अधिक ५०० फुट है। इसका पानी बड़े वेग से गिरता है इसलिए देखने में यह बहुत सुन्दर प्रतीत होता है। ये दोनों झरने टोंस नदी की दो सहायक नदियां बनाती है। टोंस नदी स्वयं भी एक झरना बनाती है जिसकी उँचाई लगभग २०० फुट और चौड़ाई ५०० फुट है।

वर्षा के अन्त में यहां का दृष्य अत्यन्त सुहावना और आकर्षक होता है। खूब हरी हरी घनी घास निकल आती है। पेड़ भी खूब हरे भरे हो जाते हैं। पौधों में रंग विरंगे फूल खिले होते हैं। ऐसे समय जब प्रातःकाल की सुनहली किरणें, कलकल स्वर में वेग से गिरने वाले झरनों के श्वेत जल पर पड़ती हैं तो दृष्य और भी अनोखा तथा मन मोहक हो जाता है। इन झरनों में पूरे वर्ष भर पानी रहता है, इसलिए ये बिजली पैदा करने के काम भी लाए जा सकते हैं। कभी कभी वर्षा काल में एकाएक इसमें बाढ़ भी आ जाती है जिससे हानि होने का बहुत डर होता है।

यह नदी सिंचाई के काम भी आती है क्योंकि इसमें पूरे वर्ष पानी रहता है इसलिए छोटी छोटी नावों द्वारा थोड़ा बहुत व्यापार भी होता है।

सोन नदी अमरकंटक से निकलती है। यह स्थान सोन भरा के नाम से प्रसिद्ध है। इस नदी का ऐतिहासिक महत्व है। 'सोन' शब्द को भी लोग बहुत से अर्थ बताते हैं। इस सम्बन्ध में अनेकों दन्त कथाएँ भी प्रचलित हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि कदाचित् पुराने समय में इस नदी के किनारे की भूमि में सोना अधिक पाया जाता रहा हो और उसी से इसका नाम 'सोन' अर्थात् 'लाल सोना' पड़ गया हो। कुछ अन्य लोगों के कहने के अनुसार इसके किनारे बालू बहुत होता था और उसमें चमकदार कणों की अधिकता होती थी। इसी कारण इसका नाम सोन पड़ा। इसके अतिरिक्त वहाँ के रहने वाले सोन शब्द के बहुत से अर्थ और इतिहास बताते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि भगवान ब्रह्म ने अमरकंटक पर्वत पर दो बूंद आंसू गिरा दिया था, उसी से इस नदी का जन्म हुआ।

यह नदी बहुत पवित्र मानी जाती है। हिन्दुओं का विश्वास है कि इस नदी में नहाने और इसके किनारे बैठ कर 'संध्या' करने से मोक्ष प्राप्त होता है। कुछ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि ब्राह्मण की हत्या करने वाला व्यक्ति भी यदि इस नदी में स्नान कर ले तो उसकी ब्रह्म-हत्या क्षमा हो जाती है और मरने पर स्वर्ग प्राप्त होता है। इस नदी का उल्लेख वाल्मीकि तथा तुलसीदास कृत रामायणों तथा श्रीमद्भागवत् में भी मिलता है। कई अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी इसका नाम आया है।

सोन नदी सिंचाई के लिए बहुत कम उपयोगी है। लेकिन इसके द्वारा लाई हुई मिट्टी के कारण इसके किनारे की उपज बहुत अच्छी होती है। कभी कभी बरसात के दिनों में इस नदी में भयानक बाढ़ आ जाती है जिससे पास के गावों और बस्तियों को बहुत हानि पहुँचती है।

इसकी सबसे बड़ी सहायक नदी महानदी है। यह उससे सारसी के निकट मिलती है। इसके अतिरिक्त

इसकी तीन सहायक नदियाँ और हैं। ये भी महत्वपूर्ण हैं। ये सब नदियाँ भी अमरकंटक से निकलती हैं।

खनिज पदार्थ—करीब करीब पूरे राज्य में कुछ न कुछ खनिज-पदार्थ पाये जाते हैं। लोहे की खानें कई स्थानों पर हैं। चूना और चूने के पत्थर भी काफी मात्रा में पाये जाते हैं। इन चूने के पत्थरों से गहने बनाने में काम आने वाले कीमती संगमरमर भी बनाए जा सकते हैं। लेकिन यहाँ के खनिज पदार्थों को ढूंढ़ निकालने के लिए अभी तक कोई खोज नहीं हुई है। इसलिए यहाँ के खनिज पदार्थों के सम्बंध में ठीक ठीक कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

विंध्याचल पर्वत से मकान बनाने के मूल्यवान पत्थर निकाले जाते हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ एक प्रकार का पत्थर और पाया जाता है जिसे जलाने से बहुत अच्छे ढंग का चूना बनता है। यह पत्थर फर्श पर लगाने के काम में भी लाया जाता है।

यहाँ कोयला बड़ी मात्रा में पाया जाता है। उमरिया की खानों से कई वर्षों से लगातार कोयला निकाला जा रहा है। लेकिन जोहिला की खानों में

इससे भी अच्छे ढंग का कोयला पाया जाता है। गोंडवाना की खानों में लोहे के साथ साथ कोयला भी पाया जाता है। गोंडवाना में अच्छे ढंग की चिकनी मिट्टी भी पाई जाती है।

रीवाँ के जंगलों में साल के वृक्ष बहुत ज्यादा पाये जाते हैं। साल, टेंडू और खैर के वृक्ष भी काफी मात्रा में मिलते हैं। इनके अतिरिक्त अनेकों प्रकार की झाड़ियों के पेड़ भी पाए जाते हैं।

ये जंगल विशेष रूप से शिकार के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ शेर बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। इनके अतिरिक्त भालू तेंदुए और सांभर आदि भी काफी बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। दक्षिण भारत में पाए जाने वाले दूसरे जानवर भी खूब मिलते हैं। यहाँ शिकार खेलने के लिए दूर से लोग आते हैं।

जलवायु और वर्षा—यहाँ जाड़े में बहुत जाड़ा और गर्मी में कड़ी गर्मी पड़ती है। मुख्यतः पहाड़ी भाग में जाड़े का मौसम छोटा होता है।

वर्षा यहाँ लगभग ४२°२३" प्रति वर्ष होती है।

संक्षिप्त इतिहास

रीवां राज्य का घराना बघेलों का घराना है। मुसलमानी काल के बाद ही यह नाम पड़ा है। मुसलमानी काल के पहिले यह क्षेत्र महाकोशल, चेदि देश और दाहाल में पड़ता था। अकबर के ज़माने में यह क्षेत्र भट-धीर और इसके कुछ हिस्से कालिंजर में पड़ गये। भट धीर और बान्धो एक ही क्षेत्र का नाम है।

इस क्षेत्र का सम्बन्ध बहुत दिनों से हैहय कलचुरियों और चेदियों से रहा है। महाभारत, रामायण और बौद्ध साहित्य में इस क्षेत्र में इन्हीं लोगों के साम्राज्य की चर्चा मिलती है। बुद्ध के काल में सोन की घाटी तक मगध राजाओं के अधिकार में था। इसका उत्तरी पश्चिमी भाग चेदियों के अधिकार में था। हैहयों ने पहिले ही नर्मदा की घाटी पर अधिकार कर लिया था। इनकी पहिली राजधानी महिषमती था आजकल की माहेश्वर थी। ये लोग अपने को यदुवंशी कहते थे।

सातवीं सदी में बघेल खण्ड पर चेदियों का पूरा अधिकार हो गया। कालिंजर से इन लोगों ने अपना साम्राज्य बढ़ाना शुरू किया। इस क्षेत्र को इसीलिये

चेदि देश कहा जाने लगा। इन राजाओं की उपाधि थी 'कालिंजर-पुर वरधेश्वर'।

नवीं सदी से बारहवीं सदी तक यह कलचुरियों का राज रहा। इनका सब से प्रसिद्ध राजा गांगेय देव विक्रमादित्य था। उसका काल १०३८—४२ था। बाद में चन्देलों ने कलचुरियों को मार भगाया और बारहवीं सदी के अन्त में अपना साम्राज्य इस क्षेत्र में स्थापित किया। चंदेलों के समय की अन्तिम चर्चा १८८६ तक की मिलती है।

बड़े बड़े राजाओं के हाथों से मुसलमानी काल में यह क्षेत्र निकल गया। तब भरों 'सेमरों' चौहानों और गोडों ने इस क्षेत्र के भिन्न भिन्न भागों पर अधिकार किया।

अब हम सीधे बघेलों के इतिहास को देखेंगे। रीवां के राजा बघेल राजपूत हैं। ये अपने का अन्हिल-षार पाटन का वशंज कहते हैं। बघेलों का कहना है कि वीर धावल (१२१६-३८) के एक बेटे व्याघ्र देव उत्तर भारत में आये और उन्होंने मरफा के किले को जीत लिया। मरफा कालिंजर से १८ मील दूर

है। लेकिन इस इतिहास पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। सच तो यह है कि रीवां राज घराने और उसके इतिहास का सही पता लगाना कठिन काम नहीं है। प्रमाण और विवरणों की कमी के कारण हम यह नहीं कह सकते कि इस बारे में प्रचलित साहित्य अथवा कथाओं में कौन सही है। हां, सोलहवें राजा भीर देव के बाद से हमें कुछ प्रामाणिक बातें मिलने लगती हैं।

रीवां के बघेल राजा की चर्चा सब से पहिले बहलोल लोदी (१४५१-८६) के काल में मिलती है। जौनपुर के शासक हुसेन शाह जिस समय भाग रहा था। उस समय रीवां के राजा भीर ने उसकी सहायता की। बादशाह ने हुसेनशाह को हरा दिया और जौनपुर का शासक मुबारक शाह को बना दिया लेकिन भीर हुसेनशाह की ही सहायता करता रहा। मुबारक शाह को बन्दी भी बना लिया। इस पर सिकन्दर लोदी ने उस पर हमला करना चाहा तब राजा भीर ने मुबारकशाह को छोड़ दिया। लेकिन वह जौनपुर के राज घराने की सहायता करता ही रहा। मजबूर

होकर सिकन्दर लोदी को सन् १४९४ ई० में बघेल खण्ड पर हमला करना पड़ा। वह कान्तीत तक गया। राजा भीर ने हार मान ली और उसे कान्तीत का इलाका फिर वापस मिल गया। १४९५ में सिकन्दर लोदी ने फिर भीर पर हमला किया। राजा भीर के पीछे वीर सिंह ने बादशाह का मुकाबिला किया। लेकिन उसे हार माननी पड़ी और वह पन्ना भाग गया। भीर भी सर-गुजा भागे और वहीं रास्ते में उनकी मृत्यु होगई। सिकन्दर लोदी बान्धोगढ़ से बीस मील उत्तर पाफुन्द तक आया। लेकिन रसद की कमी की वजह से उसे जौनपुर वापस जाना पड़ा।

जब यह समाचार हुसेनशाह को मिला तो उसने तुरन्त सिकन्दर लोदी के ऊपर धावा बोल दिया। सिकन्दर ने कुछ दिनों तक मुठभेड़ बचाई। उसने इसी बीच में भीर ने शीलवाहन के पास सुलह का संदेशा भेजा। वे अपनी सहायता के लिए तैयार कर लिया। हुसेनशाह की हार हुई। इसी समय सिकन्दर लोदी ने शीलवाहन से उसकी लड़की शादी के लिये मांगी। शीलवाहन ने इन्कार कर दिया। इस पर

बादशाह बहुत बिगड़ा और उसे पुराना बदला निकालने का अच्छा अवसर मिल गया। उसने बान्धोगढ़ तक रीवां राज्य के क्षेत्रों को तहस नहस कर दिया। ज़मीन खेती के लायक नहीं रह गई। लेकिन वह बान्धोगढ़ पर अधिकार नहीं कर सका। वह जौनपुर लौट आया। आते समय उसने बाँदा तक क्षेत्र को नष्ट भ्रष्ट कर दिया।

सन् १५०० में शील बाहन के पुत्र वीर सिंह को गद्दी मिली। आज के पन्ना रियासत के वीर सिंह पुर को इसी वीर सिंह ने बसाया था। वीर सिंह सिकन्दर लोदी का मित्र था और उसके दरबार में अक्सर जाया करता था। सन् १५१५ में उसने गढ़मन्डल के अमान दास को शरण दी। यह अमानदास प्रसिद्ध रानी दुर्गावती का ससुर था। बाद में कुछ कारणों से वीरसिंह ने अमान दास के गढ़ पर धावा किया। अमान दास भाग निकला। अन्त में अमान दास कुछ सिपाहियों के साथ वीरसिंह से मिलने आया। काफ़ी रोने गाने पर राजा वीरसिंह ने उसे क्षमा कर दिया।

वीरसिंह ने १५२७ में कन्हवा की लड़ाई में राना

साँगा को ४००० घुड़सवारों के साथ सहायता दी थी। बाबर ने इसी बीरसिंह को अपनी पुस्तक में 'नरसिंह' कह कर लिखा है। सन् १५४० में बीरसिंह की मृत्यु हो गई। उसकी गद्दी उसके लड़के बीरभान को मिली।

बीरभान (१५४०–५५)—हुमायूँ और शेरशाह के समय में रीवां में राज्य कर रहा था। एक कथा है कि हुमायूँ भागते हुये अपनी बीबी हमीदा बानू को बीरभान के हाथ में दे गया था। बान्धोगढ़ के शरण गृह में जिस समय हमीदा बानू रह रही थी उसी समय अकबर का जन्म हुआ। लेकिन इस कथा को सच नहीं माना जा सकता। अकबर तो अमरकोट में १५ अक्तूबर १५४२ में पैदा हुआ था और इसके साल भर ही पहिले हुमायूँ ने हमीदा बानू से सिन्ध में शादी की थी। यह अवश्य है कि हुमायूं के कुछ साथियों ने कन्नौज की लड़ाई (१५३६) के बाद बघेल राजा के यहाँ शरण ली थी। लेकिन मुसालमान इतिहासकार इसके बारे में कुछ नहीं बताते।

रामचन्द्र (१५५५–६२) बीरभान के बाद रामचन्द्र गद्दी पर आये। इस राजा का समय अकबर

बादशाह का था। मुसलमान लेखकों ने बार बार इस राजा की चर्चा की है। १५५५ में इब्राहीम सूर ने राजा रामचन्द्र पर हमला किया। राजा की जीत हुई और उसने इब्राहीम को सम्मान पूर्वक अपने पास रक्खा। कुछ दिनों तक इब्राहीम रामचन्द्र के मेहमान के रूप में रहे।

अपने शासन काल के छठवें साल में (१५६२) अकबर ने महान संगीतज्ञ तानसेन का नाम सुना। तानसेन उस समय रामचन्द्र के दरबार में रहा करते थे। तानसेन ने अकबर के दरबार में बहुत नाम और धन कमाया। मरते समय तक तानसेन मुसलमान हो चुका था। उसका मकबरा अब भी ग्वालियर में बना है। तानसेन के गाने आज भी हिन्दुस्तान के कोने-कोने में गाये जाते हैं।

राजा रामचन्द्र अकबर का आधिपत्य स्वीकार करने के लिये स्वयं जाने को बहुत दिनों तक तैयार नहीं हुये। उन्होंने अपने लड़के बीरभद्र को अकबर के दरबार में भेजा। अकबर के शासनकाल के अट्ठाइसवें साल में (१५८३–८४) बीरभद्र ने कहा कि अगर

रामचन्द्र के पुराने दरबारी मित्र बुलाने जायं तो शायद वे आ जायेंगे। राजा बीरबल जो बघेल खंड के पास पहिले रह चुका था, और जैन खाँ कोका, दोनों रामचन्द्र के पास भेजे गये। रामचन्द्र उनके साथ बादशाह के पास आये और फतहपुर सीकरी के दरबार में शामिल हुये। सम्राट ने उनका भरपूर सम्मान किया। रामचन्द्र ने सम्राट को लाल, पन्ना, हीरा, जवाहरात बहुत सा भेट में दिया। बदले में सम्राट ने उन्हें १०१ घोड़े दिये। रामचन्द्र की मृत्यु १५६२ में हो गई। उन्हीं राजा रामचन्द्र के बारे में बदायूँनी ने कहा है "इतना दिलदार शासक उस समय कोई नहीं था। एक दिन में रामचन्द्र ने तानसेन को १ करोड़ सोने के मुहर दिये थे।"

रामचन्द्र के बाद बीरभद्र, विक्रमादित्य, अमर सिंह अनूपसिंह, भाओ सिंह, अनिरुद्ध सिंह, अजीत सिंह जयसिंह आदि राजे गद्दी पर बैठे। लेकिन इन लोगों के बाद राजा विश्वनाथ सिंह, रघुराज सिंह आदि अधिक प्रसिद्ध हुये हैं। महाराज विश्वनाथ सिंह को १८३३ में रीवां की गद्दी मिली। आप काफी सफल और ओजस्वी

शासक हो गये हैं। साहित्य और कला से आपको बड़ी रुचि थी। इनके बाद महाराज रघुराज सिंह गद्दी पर आये। रघुराज सिंह (१८५४–८०) रीवाँ राज्य के प्रथम वैष्णव शासक महाराज रघुराज सिंह हुये हैं। आपको कला, साहित्य कविता आदि में बहुत प्रेम था। कवियों और कलाकारों का सम्मान आपके दरबार में अधिक होता था। आपने स्वामी मुकुन्दाचार्य से वैष्णव मत की दीक्षा ली और उनके रहने के लिये लक्ष्मण बाग़ का स्थान दे दिया।

१८५७ के ग़दर में महाराज रघुराज सिंह ने अंग्रेज़ों को मदद की और बघेलखंड में शान्ति क़ायम करने के लिये २००० आदमियों की सेना दी। बागी कुंअर सिंह को इसी सेना की मदद से लेफ़्टिनेन्ट विलोर की ओसबर्न ने हराया था। अच्छे राम के लिये महाराज रघुराज सिंह को अंग्रेजों की ओर से सोहागपुर और अमरकण्टक के ज़िले दिये गये। १८६३ में आपने ईस्ट इण्डियन रेलवे को ज़मीन दी। आपने राज्य शासन व्यवस्था को फिर से संगठित करने के लिये राजा सार दिनकर रात के० सी० यस० आई० को

नियुक्त किया। यहाँ की एजेन्सी फिर से क़ायम की गई और रेज़ीडेन्ट मतना में रहने लगा। १८६० ई० में महाराज रघुराज सिंह जी सी० एस० आई० बनाये गये। लार्ड कैनिंग ने अपने हाथ से आपको यह उपाधि दी। १८७० में आप आगरा दरबार में भी शामिल हुये। १८७६ और १८७७ के दिल्ली दरबार में भी आप गये थे। आपकी मृत्यु १८८० में हो गई।

वेंकटरमण सिंह (१८८०—इसके बाद महाराज वेंकटरमण सिंह गद्दी पर आये। गद्दी पाने के समय आपकी उम्र ६४ साल की थी। पोलिटिकल एजेन्ट आपके बाल्यकाल में राज कार्य देखते रहे। १८९५ में आपको राज्य कार्य चलाने का अधिकार मिला। १८९७ में बहुत बड़ा अकाल पड़ा अकाल-पीड़ितों की सहायता से प्रसन्न होकर अंग्रेज़ी सरकार ने आपको १८९७ में जी० सी० एस० आई० की उपाधि दी। १९०३ में आप दिल्ली दरबार गये। वहाँ आपको सोने का तमग़ा मिला। १९०५ में आपने सम्राट के बेटे और दामाद का दर्शन इन्दौर में किया।

आपने दो शादियां की थीं—पहिली शादी डुमराँव

के राजा की लड़की से, दूसरी शादी रतलाम की राजकुमारी से। १६०३ में उनके एक लड़का पैदा हुआ जिसका नाम गुलाब सिंह रक्खा गया।

जनसंख्या

१६०१ की जनगणना के अनुसार यहां की जनसंख्या १,३२७,३८५ है। इस प्रकार से एक वर्ग मील की आबादी का औसत १०२ है। पहाड़ी भागों की जनसंख्या केवल ७२ प्रति वर्ग मील है। लेकिन अधिकतर उन भागों की जो कि पहाड़ी नहीं हैं, यहां जनसंख्या १७६ व्यक्ति प्रति वर्ग मील है।

इस राज्य में केवल चार नगर हैं—(१) रीवां (२) सतना (३) उमरिया (४) गोविंदगढ़। यहां के गांवों की कुल संख्या ५,५६५ है। इनमें से ५०३९ गांवों की जन संख्या ५०० से कम है। शेष ५०० से ५००० तक है।

यहां केवल ६ या ७ प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो अन्य राज्यों के प्रान्तों से आये हैं। शेष का जन्म

इसी राज्य में हुआ है। और इस प्रकार से वे यहीं के रहने वाले हैं।

यहां स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कुछ अधिक है। ऐसा मुख्यतः पहाड़ी प्रदेशों में है। यहां ६५६,३७० पुरुष और ६६८,००८ स्त्रियां हैं।

यहां के रहने वालों में अधिकतर हिन्दू हैं। इनकी संख्या लगभग ७६ प्रतिशत है। शेष २४ प्रतिशत में मुसलमान, सिक्ख, जैन, पारसी और ईसाई आदि हैं।

यहां की मुख्य भाषा बघेलखंडी है। इस भाषा को लगभग ६४ प्रतिशत लोग बोलते हैं। इसके अतिरिक्त केवल हिन्दी भाषा उल्लेखनीय है। बघेलखंडी के बाद राज्य में केवल यही भाषा महत्व-पूर्ण है।

जहां तक शिक्षा का सम्बन्ध है यहां का विशाल जन समूह अनपढ़ है। लिख-पढ़ लेने वालों की संख्या केवल ३५,६४६ है। इसमें स्त्रियां ५,३४७ हैं।

भारत के अन्य भागों की भांति यहां भी अनेकों जाति तथा वंश परम्परा के लोग रहते हैं। इनमें सब से अधिक संख्या ब्राह्मणों की है। इनकी कुल संख्या २२८,०४६, अर्थात १७ प्रतिशत है। ब्राह्मणों

के अतिरिक्त रहने वाले कुनबी, चमार, राजपूत और अहिर आदि हैं। इनमें सब से बड़ी संख्या कुनबियों की है, ये ६ प्रतिशत हैं। करीब करीब इनके बराबर ही चमारों की संख्या भी है। कुनबियों की संख्या ७६,४८२ है और चमारों की ७८,१६३। इस प्रकार से केवल एक हज़ार से कुछ अधिक का ही अन्तर है। राजपूतों की संख्या ७२,१२६ अर्थात ५ प्रतिशत है। अहीरों की संख्या इन सब से कम है। वे केवल ३ प्रतिशत हैं।

पूरी जन-संख्या के ६४ प्रतिशत लोग किसान हैं या खेतों में मज़दूरी कर अपना पेट पालते हैं। इनमें जमींदारों की और चरवाहों की संख्या शामिल नहीं है। जमींदार यहां १८,४५१ हैं। लेकिन चरवाहे काफी हैं। उनकी संख्या लगभग ३ प्रतिशत है। शेष लोग दूसरे काम-धन्धों द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इनमें मज़दूरी करने वालों की संख्या सब से अधिक है। कुछ लोग बाँस का व्यापार भी करते हैं। इस काम में बहुत से मज़दूर भी लगे हुए हैं।

यहां के पूर्वज धोती और उपन-जामा तथा मिरजई

आदि पहिनते थे। ये कपड़े अब भी थोड़े बहुत पहिने जाते हैं। लेकिन आजकल लोग अंग्रेज़ी और देशी-दोनों मिला हुआ पोशाक पहिनना अधिक पसन्द करते हैं। हिन्दुस्तान के अन्य प्रान्तों के रहने वालों की तरह वे भी अब कोट पैंट और वेस्टकोट आदि पहिनने लग गए हैं। अंग्रेज़ी जूतों का तो खूब प्रचार है। 'जामा' तो अब केवल ब्याह के अवसर पर दूल्हा पहिन लेता है। पहिले के लोगों की भांति साफा बाँधने और कन्धे पर दुपट्टा डाल कर चलने का अब भी थोड़ा बहुत रिवाज़ मिलता है। शहर के रहने वालों का झुकाव दिनों-दिन अंग्रेज़ी वेश-भूषा की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा है।

लेकिन स्त्रियों के पहिनावे में कोई विशेष अन्तर नहीं आया है। हां! लहंगा पहिनने की चलन अब अवश्य नहीं है। वे केवल कुछ ही अवसरों पर पहिने जाते हैं। विधवाओं को अवश्य लंहगा पहिनने की मनाही है। आज कल भी रीवां राज्य की स्त्रियां केवल धोती और चोली पहिनती हैं यही उनका मुख्य पहिनावा है।

यहां के किसान छोटे-मोटे मिट्टी के घर बना कर

रहते हैं। उनको कड़ा जीवन व्यतीत करना पड़ता है। वे सूर्य निकलते ही अपने खेतों पर चले जाते हैं। दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद वे सायंकाल—दिया जलने के समय वापस आते हैं। उनका खाना प्रायः उनके बाल-बच्चे या औरतें खेत में ही पहुँचा देती हैं जिसे वे दोपहर में करीब दो बजे खाते हैं। यही उनके दम लेने तथा सुसताने का समय होता है। घन्टा आध घन्टा वहीं पर निवास करते हैं। खाने के लिए भी केवल रूखी-सूखी जव बाजरे की रोटी मिलती है और यह भी न मिलने से चबैने से ही काम चलाते हैं।

यहां भी शादी-विवाह में खूब धन खर्च करने का रिवाज है। बड़े बड़े अमीर और जमींदार तथा ताल्लुकेदार तो दस-दस हज़ार रुपये तक खर्च कर डालते हैं।

भारत के अन्य भागों की भांति यहां के हिन्दू भी अपने मुर्दों को जलाते हैं और उनकी राख को गङ्गा नदी या किसी अन्य स्थानीय नदी में फेंक देते हैं। मुसलमानों में मुर्दों को दफ़न करने की प्रथा है।

दशहरा, दिवाली और होली तथा राखी आदि यहां के मुख्य त्योहार हैं। दशहरा का त्योहार कुआर

के महीने में मनाया जाता है। इस दिन लड़ाई के सारे हथियार और अन्य सामान निकाले जाते हैं, उनकी सफाई होती है और फिर उनकी पूजा की जाती है। इस दिन बड़ा दरबार भी लगता है और महाराज का जलूस भी निकलता है जिसमें सब सरदार भी उनके साथ होते हैं। दिवाली के दिन सभी अपने अपने घरों और दूकानों में रोशनी करते हैं। इस दिन से व्यापार का नया वर्ष शुरू होता है। बही और किताब तथा कलम-दावात की पूजा की जाती है। होली का त्योहार फागुन के महीने में पड़ता है। इस अवसर पर लोग खूब खुशी मनाते हैं, या रंग खेलते हैं और अबीर-व-गुलाल में रंगे सने रहते हैं। लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं और खूब दावतें होती हैं।

कृषि

खेती ही यहां के लोगों का सब से बड़ा जीवनोपार्जन का साधन है। इसे यहां के लोग अन्य पेशों से अधिक अच्छा समझते हैं। इस सम्बन्ध में एक कहावत भी प्रसिद्ध है :—

उत्तम खेती मध्यम बान। निकृष्ट चाकरी भीख निदान ॥

इस प्रकार से खेती करना सब से अच्छा काम समझा जाता है। उसके बाद व्यापार का नम्बर आता है। नौकरी सब से छोटा पेशा कहा जाता है और भीख माँगने को लोग घृणित समझते हैं।

खेती के अनुसार हम रीवां राज्य को दो भागों में बांट सकते हैं :—(१) कैमूर पर्वत श्रेणी के ऊपर का भाग। यहां की मिट्टी बहुत उपजाऊ है और अच्छी फसलें होती हैं। (२) पहाड़ी हिस्सा। इस भाग के केवल घाटियों में ही खेती होती है।

वर्षा प्रारम्भ होने के पूर्व ही किसान अपने खेत को जोत डालता है और वर्षा शुरू होते ही बोआई होने लगती है। दुफसली केवल उन स्थानों पर बोई

जाती है जहां की मिट्टी नम है और सिंचाई के लिए पानी आसानी से प्राप्त हो जाता है। कोदों, मटर और अरहर आदि अक्सर दो चीज़ें एक ही समय में एक खेत में बो दी जाती है। खेतों में खाद डालने का प्रबन्ध अवश्य अच्छा नहीं है। इसका मुख्य कारण किसानों की गरीबी है। केवल गांव का मैला और गोबर खाद के काम आते हैं। सिंचाई की आवश्यकता गन्ना, अफ़ीम, गेहूँ और जौ की उपज के लिए होती है।

यहाँ खरीफ और रबी, दोनों फसलें होती हैं। यहां पैदा होने वाले मुख्य अनाज ज्वार, अरहर धान, तिल, मक्का, उर्द, गेहूँ, चना, जौ, अलसी और मसूर आदि हैं। इनके अतिरिक्त बागों में कई प्रकार की तरकारियां और फल भी होते हैं। पान, गन्ना, तम्बाकू और पोस्ते की भी खेती यहां अच्छी होती है और इनके लिए कृत्रिम सिंचाई का प्रबन्ध भी करना पड़ता है।

यहाँ चरागाह बहुत अधिक हैं; बल्कि यहां के लोगों की आवश्यकता से कहीं अधिक हैं। गाय, बैल और भेड़, बकरी, यहां के पाले जाने वाले मुख्य जानवर हैं। लेकिन इन जानवरों को बेचने के लिए

कोई बाज़ार नहीं है और ये बड़े बड़े मेलों में बेचे जाते हैं।

जङ्गल

पूरे राज्य में लगभग ४,६०० वर्ग मील तक सघन बन फैले हुए हैं। कैमूर पर्वत श्रेणी के उत्तरी भाग में मकुन्दपुर के चीड़ के बन के अतिरिक्त और कोई जंगल नहीं है। लेकिन इस पर्वत के दक्षिणी भाग में अनेकों प्रकार के वृक्षों के घने जंगल हैं। इनमें पहाड़ी ढालों पर सरई के वृक्ष सब से अधिक मिलते हैं।

यहां के जंगलों में पाए जाने वाले मुख्य पेड़, अंजीर, अशोक, बहेड़ा, बांस, बेल, हर्रा, गुर्जा, इमली, जामुन, कदम, काठजामुन, किवांच, कुलू, महुआ, मूंगा और नीम आदि हैं। शीसम, सीताफल और टेंडू आदि वृक्ष भी उसी मात्रा में पाए जाते हैं।

यहां कई किस्म की घास भी पाई जाती है। इसमें रूसा, मूंज, खस और दूब मुख्य हैं।

इन जंगलों में कोल, गोंड, माझी और बियार आदि जंगली जाति के लोग रहते हैं।

यहां काम करने वाले पुरुषों को २ आना और स्त्रियों को ६ पैसा रोज़ मज़दूरी मिलती है।

इन जंगलों में पैदा की हुई चीज़ों के बेचने से राज्य को काफी आमदनी हो जाती है। १६०३-४ में ७७ लाख की आमदनी हुई थी जिसमें से १ लाख प्रबन्ध आदि में व्यय हुआ था। १६०४-५ में आमदनी ३.६ लाख थी और खर्चा ७५,००० था।

खनिज पदार्थ

रीवां में खनिज पदार्थ खूब पाए जाते हैं। उन खनिज-पदार्थों में कोयले का नम्बर सब से पहले आता है। कोयले से ही सब से अधिक आमदनी भी है। उम-रिया की कोयले की खान सब से बड़ी है और इससे लाखों रुपयों का कोयला निकाला जा सकता है।

सतना के पास चूने के पत्थर बहुतायत से पाए जाते हैं। इन पत्थरों को निकालने का ठीका 'सतना स्टोन एण्ड लाइम कम्पनी' को दे दिया गया है। उनको निकाल लेने के बाद मेसर्स ग्लैडस्टोन वैली एण्ड कम्पनी

द्वारा चूना तैयार किया जाता है। इसके लिए २ आना प्रति टन राज्य को 'रायल्टी' दी जाती है।

पहले यहां लोहा भी काफी निकाला जाता था। वहां वे पुराने ढंग से लोहा निकालने का काम करते थे लेकिन अब उनमें से बहुत थोड़ी खानें शेष हैं। अब वहां केवल स्थानीय मांग को पूरा करने भर के लिए कोयला निकाला जाता है।

कल-कारखाने और कारीगरी के काम

इस राज्य में कल-कारखानों और कारीगरी के कामों का अभाव है। इस सम्बन्ध में रीवां अन्य बहुत से राज्यों और अंग्रेज़ों के आधीन सूबों से कहीं अधिक पिछड़ा हुआ है। कुछ लोग इसका कारण बताते हुए यह कहते हैं कि वहां खेती करना लोगों को बहुत सरल प्रतीत होती है और वे इस काम को करते आए हैं, इसलिए उनका ध्यान किसी दूसरे व्यवसाय की ओर नहीं जाता। दूसरे इसमें उन्हें कुछ झंझट भी नहीं दिखलाई पड़ती और इससे उनकी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं। अतः वहां

केवल थोड़ी सी वे चीज़ें बनाई जाती हैं जिनके बिना वहां के लोगों का काम चल ही नहीं सकता और जिनकी कि साधारण जीवन बिताने में नित्य ही ज़रूरत पड़ती है।

हां, इस राज्य में साहित्य और संगीत विद्या की ओर अधिक ध्यान दिया गया है और दरबार की ओर से खूब प्रोत्साहन मिलता रहा है। तानसेन ऐसे जगत-प्रसिद्ध गायक और संगीत विद्या के ज्ञाता इसी भूमि पर हुए हैं। तानसेन महाराजा रामचन्द्र के दरबार के थे। महाराज विश्वनाथ सिंह और महाराज रघुराज सिंह के समय में भी दरबार में अपने समय के सब से अच्छे और प्रसिद्ध संगीतज्ञ रहे हैं।

यहाँ हाथ की कारीगरी में सोनारी का सब से पहिला नम्बर आता है। ये सोनार स्थानीय लोगों के लिए तरह तरह के गहने जैसे कड़ा, कर्णफूल, दामिनी और बेरन आदि बनाते हैं।

गरीब लोगों के लिए चांदी तथा अन्य धातुओं के गहने बनाने का भी काम होता है। ये गहने छोटी जाति

की औरतें बड़े चाव से पहिनती हैं और मेले आदि में इन गहनों के खरीदने की धूम रहती है ।

लाह यहां के जंगलों में काफी मिल जाता है। इसलिए लाह के गहने, जैसे कुछ प्रकार की चूड़ियां आदि, बनाने का काम भी होता है ।

लकड़ी के काम में यहां की सब से प्रसिद्ध वस्तु हुक्का है । यह यहां बहुत ही सुन्दर बनता है और राज्य के बाहर भी भेजा जाता है ।

घरों में काम आने वाले मिट्टी के बर्तन जैसे घड़ा आदि भी यहां बनाए जाते हैं ।

गज़ी (हाथ का बुना हुआ मोटा कपड़ा) अब भी थोड़ा बहुत बनाया जाता है । पहले कपड़ा बुनने का काम यहां खूब होता था । कोरी और जुलाहे पुश्त-दर-पुश्त से हज़ारों की संख्या में यह काम करते चले आए हैं । लेकिन अब यह कारबार बिल्कुल मिट सा चुका है । लगभग साठ हज़ार से घट कर इस काम को करने वालों की संख्या आठ हज़ार रह गई है । रेल और मशीनों के आ जाने से यह उद्योग चौपट हो गया है । अब तो सभी जगह मशीन से बुने हुए कपड़ों का प्रयोग

होता है। देहात में रहने वालों को भी घर में बुने हुए कपड़े से मशीन द्वारा बना हुआ कपड़ा सस्ता और मज़बूत पड़ता है। पहले घर-घर में चर्खा चलाया जाता था। विधवाओं के लिए तो जीविका चलाने का सब से बड़ा सहारा था। लहंगे यहां बहुत ही सुन्दर बनाए जाते थे। लहंगीर अब भी नाममात्र को बच गए हैं लेकिन वे बे-रोज़गार हैं इससे सुखी रूखी रोटी भी पैदा कर लेना कठिन हो गया है। इन सब का परिणाम यह है कि मशीन से बने हुए सामान दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक बाहर से मंगाए जाते हैं।

रंगाई का काम आज कल भी रीवां में होता है। धोती साड़ियां और साफे रंगने का काम हर छोटे-बड़े शहर में होता है।

गांवों में भी मिट्टी का तेल जलना शुरू हो गया है फिर भी कोल्हू द्वारा तेल निकालने का काम काफी मात्रा में होता है।

सिलाई का काम नगरों में खूब तेज़ी के साथ बढ़ा है। यह काम मशीन द्वारा होता है और हिन्दू-मुसलमान दोनों इस रोज़गार को करते हैं।

सोहागपुर, रीवां, माधोगढ़ अमरपाटन और रामनगर आदि नगरों में कपड़े पर छपाई का काम होता है। यह काम केवल मुसलमान करते हैं। वे रजाई और तोशक आदि के लिए कपड़े पर सुन्दर रंगीन छपाई करते हैं। इन स्थानों में अमरपाटन और माधोगढ़ की छपाई सब से अच्छी होती है और रंग भी तेज़ तथा पक्का होता है।

बढ़ईगीरी का काम यहां बहुत ही पिछड़ी दशा में है। अच्छी कुर्सी, मेज़ आदि लकड़ी की चीज़ों को बाहर से मंगाना पड़ता है। छोटी मोटी चीज़ें तथा हल आदि सामान बनाने का काम यहीं का बढ़ई कर लेता है।

बढ़ईगीरी का सा हाल लोहे के काम का भी है। लोहार वैसे तो छोटे-छोटे गांवों में भी हैं, लेकिन इस कला में उन्होंने कोई विशेष उन्नति नहीं की है। यहां केवल सरौते अवश्य बहुत अच्छे बनते हैं और राज्य से बाहर भी भेजे जाते हैं।

रीवां-दर्शन

व्यापार

रेल के बनने से पूर्व बैलगाड़ियों द्वारा व्यापार होता था। देहात से सामान लाने के लिए अब भी बैलगाड़ी या भैंसागाड़ी का प्रयोग होता है।

उस समय यहाँ का व्यापार अधिकतर मिर्ज़ापुर, बिलासपुर और रतनपुर से होता था। इन स्थानों से चावल, नमक, चीनी, कपड़ा और बर्तन आदि मंगाया जाता था।

चीनी, चावल और नमक अधिकतर बंजारे लेकर यहाँ आते थे। उनसे दरबार और जमींदारों को खूब आमदनी होती थी। वे एक निश्चित समय पर आते थे और उस समय लोग उनसे खूब सामान खरीद लेते थे। दरबार द्वारा तो इनसे कर लिया हो जाता था, साथ ही छोटे-बड़े सभी जमींदार भी इनसे एक प्रकार का कर लेते थे जिसे 'जगात' कहते हैं। यह 'कर' बहुत थोड़ा होता था लेकिन पूरे सामान पर, जो यह बेचने के लिए जाते थे, कर देना पड़ता था; और चूँकि जितनी जमींदारी में जाते थे उतने ही वह कर देना पड़ता था, थोड़ा-थोड़ा मिला कर वह बहुत हो जाता था।

अब इस 'कर' की प्रथा बन्द कर दी गई है। केवल उनको राज्य की चुंगी देना पड़ता है। और जमींदारों (ठाकुरों) को जगात लेने का अधिकार नहीं है।

यहाँ से गेहूँ, चावल, दाल, तेल के बीज (तिल और अलसी) कपास तथा घी बाहर भेजा जाता है।

बाहर से यहाँ कपड़े, बर्तन, तेल, चीनी, तम्बाकू, मसाले, मिट्टी का तेल, कागज़, छाते, सन्दूक और शान-शौकत तथा फैशन की चीज़ें मंगाई जाती हैं।

करीब १०, ११ लाख का सामान (सोने चाँदी को छोड़ कर) यहाँ से बाहर भेजा जाता है। इसमें दो तिहाई से भी अधिक रेलों द्वारा भेजा जाता है। गल्ले को छोड़ कर अन्य सामान अधिकतर बम्बई भेजी जाता है।

सतना, मझगवान और शिवराजपुर व्यापार के केन्द्र हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि ये रेलवे-लाइन पर बसे हुए हैं।

रीवाँ, अमरपाटन; राजपुर, रघुनाथ गंज और

माधोगढ़ आदि स्थानों के बाज़ार मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त कुछ स्थानों पर साप्ताहिक बाज़ार भी लगते हैं।

यातायात के साधन

जबलपुर से इलाहाबाद जाने वाली ई० आई० आर रेलवे की शाखा तथा बंगाल-नागपुर रेलवे इस राज्य में होकर जाती हैं। जबलपुर वाली शाखा लगभग ३० मील तक राज्य में फैली हुई है और सतना, उस पर स्थिति मुख्य स्टेशन है। बंगाल-नागपुर रेलवे सोहागपुर तहसील से होकर गुजरती है और चंदिया, उमरिया और खैरी आदि उस पर स्थित मुख्य स्टेशन हैं।

इसके अतिरिक्त कारबार के आधीन करीब १४४ मील पक्की और २८८ मील कच्ची सड़कें राज्य में फैली हुई हैं।

सब से बड़ी पक्की सड़क 'ग्रेट ट्रंक रोड' है। यह सड़क जबलपुर से मिर्ज़ापुर तक फैली हुई है। इसकी एक कच्ची शाखा इलाहाबाद को भी गई है। दूसरी बड़ी सड़क सतना से नौगाँव जाने वाली सड़क

है। अन्य पक्की सड़कें रीवाँ से गोविंदगढ़, बेला से गोविंदगढ़, गोविंदगढ़ से राम नगर, रामनगर से अमरपाटन और सतना से बेला तक फैली हुई हैं। इन सड़कों पर लगभग ३० हज़ार रुपए प्रतिवर्ष राज्य को खर्च करना पड़ता है।

डाक

डाक तो बहुत थोड़े दिनों की चीज़ है। इसके पहिले लोग दूतों द्वारा पत्र भेजते थे। दरबार के पत्र ले जाने के लिए चौकीदार होते थे। लोग उस तरफ जाने वाले मुसाफिरों से अपना संदेशा या पत्र भिजवा देते थे। लेकिन ऐसे अवसर बहुत कम आते थे। और ज़रूरी काम पड़ने पर लोगों को अपने खर्च से दूत भेजना पड़ता था। अंग्रेज़ी शासन के स्थापित हो जाने के बहुत दिनों पश्चात् तक यह बात रही।

१८६३-६४ में सब से पहला डाकखाना रीवां नगर में खुला। इसके बाद इसकी शाखा गोविंदगढ़ और माधोगढ़ में खुली। महाराज विश्वनाथ सिंह के

समय में इसमें कुछ सुधार किया गया। अभी तक गावों में पत्र आदि भेजने का कोई प्रबंध नहीं था। अब राज्य की ओर से इस काम के लिए हरकारे नियुक्त किए गए। लेकिन अभी इसका प्रबंध सुचारु रूप से नहीं हो पाया था। इसका मुख्य उद्देश्य तो राज्य के काम को चलाने का था लेकिन दूसरे लोग भी एक पाई प्रति तोला के हिसाब से टिकट लगा कर अपने निजी पत्र भी भेज सकते थे। लेकिन इतने से खर्च चल नहीं पाता था और हमेशा आर्थिक कठिनाई सामने उपस्थित रहती थी।

वर्तमान समय में डाक का प्रबन्ध 'इम्पीरियल पोस्ट आफिस' के हाँथ में है। अब जगह-जगह पर डाक घर खुल गए हैं और गांवों से भी खत भेजने तथा मंगाने का प्रबंध है।

तार तथा फोन

१८८३ में 'गवर्नमेंट टेलीग्राफ डिपार्टमेंट द्वारा सतना से रीवाँ तक एक तार की लाइन बनाई गई थी।

इसका सारा खर्च दरबार को देना पड़ता था और अब भी इसका प्रबंध तो वही डिपार्टमेंट करता है लेकिन उसका खर्च राज्य को देना पड़ता है।

रीवां से गोविंदगढ़ तक एक टेलीफ़ोन की लाइन भी बनाई गई है।

शासन—पहले राज्य-काज का प्रबन्ध करने के लिए एक दीवान होता था। लाल प्रताप सिंह की मृत्यु के बाद, १६०४ से यह जगह समाप्त कर दी गई है। अब वहां दो कमिश्नर होते हैं। एक लगान सम्बन्धी काम देखता है और दूसरा न्याय विभाग तथा अन्य प्रबन्ध। इनके अतिरिक्त महाराजा के मन्त्री उनको काम में सहायता देते हैं और उनके सामने आज्ञा आदि के लिए कागज़ सामने रखते हैं। जो काम पहले दीवान करते थे, अब उसका अधिकतर भाग लगान के कमिश्नर करते हैं।

शासन सम्बन्धी विभाग निम्नलिखित हैं:—

(१) न्याय विभाग यह विभाग न्याय—कमिश्नर के आधीन है।

(२) लगान—विभाग यह लगान के कमिश्नर के आधीन है।

(३) कर और चुंगी आदि—इसके लिए एक सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है। यह लगान के कमिश्नर के आधीन होता है। इसके आधीन दो डिप्टी (छोटे) सुपरिन्टेन्डेन्ट और होते हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से चुंगी क दरोगा भी हैं जिनके द्वारा इस विभाग का काम चलता है।

(४) पुलिस विभाग—यह विभाग पुलिस के सुपरिन्टेन्डेन्ट द्वारा संचालित होता है। यह पुलिस-सुपरिन्टेन्डेन्ट रीवां शहर के मजिस्ट्रेट के आधीन होता है। असल में यह मजिस्ट्रेट ही "इन्स्पेक्टर जनरल आफ पुलिस" होता है।

(५) पब्लिक वर्क्स विभाग—इस विभाग का संचालन दो डिविज़नल अफसरों द्वारा होता है। इनमें से एक रीवां शहर में रहता है और दूसरा सतना में। इनके आधीन कई 'ओवरसियर' हैं जिनके द्वारा काम चलता है।

(६) स्वास्थ्य विभाग—बघेलखंड का 'एजेंसी सरजन' इस विभाग का सब से बड़ा अफसर होता है।

(७) विद्या सम्बन्धी विभाग—यह विभाग भी लगान के कमिश्नर के आधीन तथा देख-रेख में है। यहां दो हाई स्कूल है जो वहां के हेडमास्टरों द्वारा संचालित होते हैं। इनके अतिरिक्त वहां कई वर्नाक्यूलर स्कूल, लड़कियों के स्कूल तथा संस्कृत पाठशालाएं हैं। इनके सब से बड़े कर्मचारी एक 'इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स' (स्कूलों के दारोगा) हैं।

(८) जंगल विभाग—इसके लिए एक सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है जो सीधे दरबार के आधीन होता है। इस विभाग का काम भी दरोगों और दफादारों द्वारा लिया जाता है।

(९) एकाउन्ट विभाग—इस विभाग में हिसाब-किताब रखने का काम होता है और यह एक एकाउंटेन्ट के आधीन होता है।

राज्य का सारा काम वह किसी भी प्रकार का या किसी भी विभाग का क्यों न हो, सब का सब हिन्दी भाषा में होता है। न्यायालय की भाषा भी हिन्दी है। इसके साथ ही साथ एक अंग्रेज़ी विभाग

भी है। इस विभाग द्वारा अंग्रेज़ी में पत्र आदि भेजने का काम होता है।

पूरा राज्य ७ तहसीलों में बँटा हुआ है :—(१) हुजूर (२) रघुराज नगर (३) त्योनथार (४) मउगंज, (५) बर्दी (६) रामनगर (७) सोहागपुर। इन तहसीलों में बहुत सी भूमि ठाकुरों और जागीरदारों को दी हुई है।

तहसील का सब से बड़ा अफसर तहसीलदार होता है। उसके आधीन नायब-तहसीलदार, कानूनगो और पटवारी आदि होते हैं।

न्याय और कानून—पूर्व काल में झगड़े प्रायः पंचायतों द्वारा ही तय किए जाते थे। सब से पहले महाराज विश्वनाथ सिंह के समय में न्यायालयों की स्थापना हुई। इनमें न्यायाधीश पंडित हुआ करते थे और वे शास्त्रों की सहायता से मुकदमों का फैसला करते थे। बहुत बड़े बड़े मुकदमों को छोड़कर लिखे हुए फैसले के देने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। बड़े बड़े मुकदमों में जो लिखे हुए फैसले दिये जाते थे। उनको व्यवस्था कहते हैं। ये व्यवस्थाएँ बड़ी

लम्बी-चौड़ी हुआ करती थीं और उनमें न जाने कितनी अनाप-शनाप और अनावश्यक बातों की भरमार रहती थी। इनमें महान पांडित्य के प्रदर्शन की पूरी कोशिश की जाती थी। बड़े बड़े शब्दों का भी खूब जी खोल कर प्रयोग होता था। इन व्यवस्थाओं के अतिरिक्त अन्य सभी बातें ज़बानी होती थीं।

आज कल तो कानून की किताबें हैं जिनके अनुसार मुकद्मों का फैसला होता है। इस विभाग का सब से बड़ा अफसर लगान का कमिश्नर है। फौज़दारी और दीवानी दोनों मामलों के लिए कानून बने हुए हैं।

न्यायालयों के लिए आनरेरी मजिस्ट्रेट, डिप्टी मजिस्ट्रेट, छोटे डिप्टी मजिस्ट्रेट, मजिस्ट्रेट, दीवानी के जज और सेशन जज आदि हैं। इनके अधिकार भिन्न भिन्न हैं। इन सबों के ऊपर हाई कोर्ट है। अन्य अदालतों द्वारा किए गए फैसले (दीवानी और फौज़दारी दोनों) की अन्तिम अपील इसी अदालत में हो सकती है। इसके सभापति स्वयं महाराज होते हैं और यहां से किए गए फैसले अन्तिम होते हैं इस न्यायालय के अधिकार भी असिमित हैं।

लगान

अब लगान को अन्न आदि के रूप में लेने की चलन नहीं है और अधिकतर लगान नगद रुपयों में ही दिया जाता है।

लगान की वसूली और प्रबंध के लिए सब से बड़ा अफसर एक कमिश्नर होता है। यह स्वयं महाराजा की देख-रेख में काम करता है।

लगान भूमि के अनुसार लगाई गई है। मेंर भूमि पर १ रुपया ४ आना प्रति बीघा, दोमट के लिए १२ आना प्रति बीघा और मिगोन भूमि के लिए ८ आना प्रति बीघा तथा भार भूमि के लिए ३ आना प्रति बीघा लिया जाता है।

लगान दो किश्तों में दी जाती है। पहली, खरीफ की किश्त अगहन के महीने में दी जाती है और दूसरी, रबी-किश्त वैशाख के महीने में दी जाती है। इन सब लगानों को इकट्ठा करने के लिए ठीकेदार होते हैं। इन ठीकेदारों को बेदखल आदि करवाने का भी अधिकार होता है। लगान को इकट्ठा करने में दरबार को १ लाख से कुछ अधिक व्यय करना पड़ता है।

अन्य कर

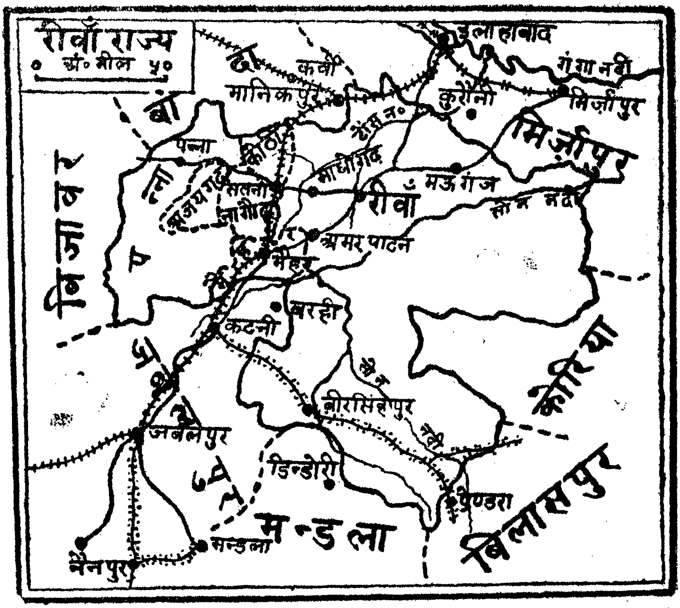
चुंगी—के लिए कोई अलग विभाग नहीं है। लेकिन इस विभाग से लगभग ६०,००० प्रति वर्ष की आय होती है।

अफीम—की यहाँ काफी खपत है। स्थानीय मांग को पूरा करने के लिए भी यहां यह पर्याप्त मात्रा में नहीं होती, इसलिए शेष इन्दौर से मंगाई जाती है। पोस्ते की पैदावार की देख-रेख सोधे दरबार द्वारा होता है। बिना लाइसेंस के कोई भी अफीम नहीं बेंच सकता। इससे भी राज्य को काफो आमदनी होतो है।

गांजा, चरस और भांग—आदि का टीका नीलाम कर दिया जाता है और उसके बाद इस पर कोई किस्म का कर नहीं लगता।



हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज सर गुलाबसिंह बहादुर
जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई०, महाराज रीवाँ


रीवाँ राज्य
अं० मील ५०
इलाहाबाद
गंगा नदी
कर्वी
मानिकपुर
कुरौनी
मिर्ज़ापुर
मिर्ज़ापुर
पन्ना
माधोगढ़
सतना
मऊगंज
रीवाँ
सोन नदी
अमरपाटन
मैहर
बरही
कटनी
बिजावर
कोरिया
जबलपुर
डिन्डोरी
पेण्डरा
मण्डला
मण्डला
बिलासपुर
नैनपुर

देश दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक पत्र

देश-दर्शन में प्रति मास किसी एक देश का सर्वाङ्ग पूर्ण वर्णन रहता है। लेख प्रायः यात्रा के आधार पर लिखे जाते हैं। आवश्यक नक़शों और चित्रों के होने से देश-दर्शन का प्रत्येक अङ्क पढ़ने और संग्रह करने योग्य होता है।

मार्च १६३६ से जनवरी १६४५ तक देश-दर्शन के निम्नाङ्क प्रकाशित हो चुके हैं:— प्रत्येक अंक का मूल्य ।≈) है।

लङ्का, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाई (श्याम) देश, बल्गेरिया, अल्सेस लारेन, काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलय-प्रदेश, फिलीपाइन, तीर्थ दर्शन, हवाई द्वीपसमूह, न्यूज़ीलैंड, न्यूगिनी, आस्ट्रेलिया, मेडेगास्कर, न्यूयार्क, सिरिया, फ्रांस, अलजीरिया, मरक्को, इटली, ट्यूनिस, आयरलैंड, अन्वेषक दर्शन भाग १,२,३, नैपाल, स्विज़रलैण्ड, आगरा, अरब, कनाडा, मेवाड़, मेक्सिको, इङ्गलैंड, विश्वाश्चर्य, पनामा, इन्दौर, पेरेग्वे, जबलपुर, काकेशिया, रीवां, बर्लिन और मालाबार······

‘भूगोल’-कार्यालय ककरहाघाट, इलाहाबाद।